International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 241-243

भारतीय समाजवाद का संवेदनात्मक विकास

अखिलेश त्रिपाठी

राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

समाजवाद एक ऐसा सपना है जिसने बीसवींष्शदी में दुनिया को सर्वाधिक आन्दोलित किया। वर्तमान शताब्दी में भी दुनिया के अलग–अलग कोनों में अलग–अलग ढंग से लोग इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करते रहेगें। इसमें किसी प्रकार की आशंका नहीं है। वर्तमान उदारीकरण के परिवेश में भी जब तक समाज में विषमता की स्थिति बनी रहेगी, समाजवाद नैसर्गिक रूप मे जीवन्त रहेगा। यह मात्र पूंजीवाद के विरूद्ध प्रतिक्रिया नहीं है। प्रत्युत यह वह शाश्वत विचार है, जो विषमता एवं अन्याय के विरूद्ध संघर्ष की निरन्तरता का प्रतीक है। जैसे ईश्वर की प्राप्ति के लिए अलग–अलग मार्ग खोजे एवं बनाये जाते रहे है, वैसे ही विषमताओं का उन्मूलन करके समता परक समाज व्यवस्था के निर्माण के लिए भी प्रयोग किये जाते रहे हैं परन्तु उन सबकी मूल प्ररेणा और उद्देश्य एक रहा है।[१]

बीती शदी के प्रारम्भ में जब दुनिया के अनेक देशों में समाजवादी समाज रचना के अनेक प्रयोग हो रहे थे, भारत के स्वतन्त्रा संग्राम में सक्रिय नौजवानों के एक समूह ने किसी एक अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र से न वंध कर समाजवाद का आयात करने के स्थान पर अपने ही देश की माटी और संस्कृत से एक नयी व्यवस्था की रचना के संघर्ष का सूत्र पात किया। इनमें पंडित नेहरू, आचार्य नेरन्द्र देव, जय प्रकाश नारायण,युसफ मेहर अली , अच्युत पटवर्धन, अशोक मेहता, मोनू मसानी, एन0 जी0 गोरे, सम्पूर्णानन्द, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, डॉ0 राम मनोहर लोहिया और एस0 एम0 जोशी आदि भारतीय समाजवादी आन्दोलन के प्रमुख संस्थापक कहे जा सकते हैं।

ये मनस्वी तपस्वी कांग्रेस के अन्दर ही अपना एक अलग मंच बना कर स्वराज आन्दोलन पर समाजवादी रंग चढ़ाने का प्रयास कर रहे थे। शुरू में महात्मा गान्धी को यह अच्छा नहीं लगा था, परन्तु बाद में उन्होने आजादी और समाजवाद के दीवानों की इस टोली का महत्व समझा। समाजवादियों को शायद यह समझने में देर लगी कि महात्मागान्धी का कर्म और दर्शन वास्तव में समाजवाद के लक्ष्यों पर ही आधारित था भले ही वे इस शब्द का प्रायोग उतना नहीं करते थे। पंडित नेहरू एवं डॉ0 लोहिया इसी भावधारा के सशक्त हस्ताक्षर हैं। स्वतंत्रता के पश्चात समाजवादी आन्दोलन के दो प्रवर्ग थे क्रमशः सत्ता पक्ष एवं विपक्ष। सत्तापक्ष का नेतृत्व देश के प्रधानमन्त्री पंडित नेहरू कर रहे थे जबकि विपक्षी समाजवाद के तीन स्तम्भ थे– आचार्य नेरन्द्र देव, लोकनायक जय प्रकाश नारायण और डॉ0 राम मनोहर लोहिया। ये विभूतियॉं हमारे बीच नहीं हैं लेकिन इनके कर्म और विचार युगों तक प्रासंगिक बने रहेंगे।[२]

भारत में समाजवादी चिन्तन के बीज अति प्राचीन काल से ही पाये जाते रहे हैं और ऋगवेद तथा धर्मग्रंथो में विशेषकर धम्म पद में मानव एकता, मातृत्व और आधुनिक समानता के सिद्धान्तों के दर्शन होते है परन्तु आधुनिक अर्थ में समाजवादी चिन्तन बीसवीं शताब्दी की उपज है। आर्थिक तथा सामाजिक पुनर्निमाण के दर्शन के रूप में समाजवाद भारत में पश्चिम के प्रभाव से ही विकसित तथा लोक प्रिय हुआ है।

भारत में आधुनिक समाजवाद के चिन्हों को लें, तो कहना होगा कि समाजवादी तत्वों का प्रथमतः दर्शन महर्षि अरविन्द के उन लेखों मे होता है जिन्हें 1893 में इन्दु प्रकाश नामक पत्र मे''पुराने के बदले नव दीप '' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित कराया। इन लेखों में महर्षि अरविन्द ने कांग्रेस की मध्यम वर्गीय मनोवृति की आलोचना करते हुए सर्वहारा की दशा सुधारने का आग्रह किया था। 1908 में लोकमान्य तिलक ने ''केसरी'' के लेखों में इसकी चर्चा की। लाला लाजपत राय सम्भवतः वे प्रथम भारतीय थे जिन्होंने समाजवाद और बोल्शेविकवाद पर कुछ लिखा। वोल्शेविकवाद के प्रति लाला लाजपत राय का कोई सहानुभूति पूर्ण दृष्टि कोण नहीं था, तथापि अपनी पुस्तकों में उन्होनें कांग्रेस पर पूंजीपति आधिपत्य की कटु आलोचना की थी। 1920 में ''इण्डियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस'' के अधिवेशन का सभापतित्व भी लालाजी ने किया। एम0 एन0 राय जिन पर मार्क्सवाद का प्रभाव था, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बुर्जुआ वर्ग द्वारा संचालन की आलोचना की थीं। चितरंजन दास रूसी क्रान्ति से अनुप्राणित अवश्य हुए तथापि क्रान्ति के प्रति उनमें कोई सहानुभूति पूर्ण आकर्षण नहीं था। दास यद्यपि समाजवादी नहीं थे, किन्तु उन्होने भारत के ट्रेडयूनियन आन्दोलन के सम्बन्ध में बड़ी सहायता पहुँचायी। भारत में समाजवादी चिन्तन को प्रोत्साहन देने में पंडित जवाहरलाल नेहरू का महत्वपूर्ण योगदान रहा। 1926 में उन्होंनेश्सोवियत संघ की यात्राा की। पंडित नेहरू ने ''सोवियत रसिया'' नामक एक लघु पुस्तिका मेंष्रूस की तत्कालीन उपलब्धियों का प्रशंसात्मक चित्र उकेरा और ''विश्व इतिहास की झलक'' तथा ''आत्मकथा'' मे कार्ल मार्क्स के वैज्ञानिक एवं आर्थिक पद्धति की भरपूर प्रशंसा की। इन पुस्तकों में हमें आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था की विशद विवेचना मिलती है।[३]

भारत में समाजवादी चिन्तन का आरम्भ तो काफी पहले ही हो चुका था परन्तु समाजवादी आन्दोलन का वास्तविक श्री गणेश मई 1934 से हुआ जब ''कांग्रेस समाजवादी दल'' की स्थापना हुई। यह ''भारत मे समाजवाद के संगठनात्मक विकास'' में एक महत्वपूर्ण घटना थी और इसी की स्थापना से सभी प्रान्तीय समाजवादी संगठनो और गुटों को अखिल भारतीय आधार पर मंच मिल गया। 1931 में बिहार में ,1932–33 में नासिक के केन्द्रीय कारावास में 1933–34 में उत्तर प्रदेश तथा बम्बई प्रान्तों में समाजवादी गुट स्थापित हो चुके थे, और इन्ही गुटों ने वास्तव में कांग्रेस समाजवादी दल के बीच कार्य किया। समाजवादियो का प्रथम अखिल भारतीय सम्मेलन 17 मई 1934 को पटना में आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में हुआ।

कांग्रेस समाजवादी दल के प्रमुख प्रतिपादकों में जय प्रकाश नारायण, डॉ0 लाहिया, अशोक मेहता, आचार्य नरेन्द्र देव ,अच्युत पटवर्धन, एम0 आर0 मसानी, कमला देवी चट्टोपध्याय, पुरूषोत्तम विक्रम दास, युसूफ मेहर अली और गंगा शरण सिंह थें। ये दस समाजवादी नेता जो समाजवादी आन्दोलन के प्राण समझे जाते थे,

अत्यन्त ही योग्य नवयुवक उत्तर प्रदेश के कांग्रेसी और मुख्यतः शहरी मध्यम वर्ग के व्यक्ति थे जिनमें से अनेको ने अपनी राजनीतिक विचार धारा के कारण परिवार या विवाह तक का त्याग कर दिया था।**४**

सैद्धान्तिक रूप से ये समाजवादी नेता तीन मिश्रित प्रवृत्तियों में विभाजित थे – (1) मार्क्सवादी (2) ब्रिटिश श्रमिक दल की भाँति सामाजिक लोक तंत्रवादी (3) लोकतन्त्रात्मक समाजवादी जिन पर गान्धी जी के विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त तथा सविनय अवज्ञा के राष्ट्रावादी आन्दोलन का एवं वर्ग संघर्ष का प्रभाव था। इन प्रवृत्तियों के मध्य एक अशान्त समझौता था। ये समस्त समाजवादी राष्ट्रीय स्वतंत्रता एवं समाजवादी समाज की संरचना के व्यापक उद्देश्य से एक निष्ठ थे।**५**

समाजवादी दल दो मुख्य उद्देश्यों को एक साथ साध रहा था। प्रथमतः वह कांग्रेस को यह विश्वास दिलाना चाहता था कि राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष की सफलता के लिए आन्दोलन में मजदूरों एवं किसानों को सहभागी बनाया जाय, क्योंकि जब तक आन्दोलन अपने आकार में विस्तार कर व्यापकता नहीं लायेगा तब तक वह सफल नहीं हो पायेगा। द्वितीय कांग्रेस समाजवादी दल साधारण जनता को यह संदेश देना चाहता था कि वह जनता के जीवन स्तर और कार्य की दशाओं में सुधार के लिए जो संघर्ष कर रहा है, वह औपनिवेशिक दासता से मुक्ति पाने के एक राजनीतिक संघर्ष का अंगमात्र है। कांग्रेस समाजवादी दल ने इस बात का सतत प्रयास किया कि कांग्रेस इस बात को समझे कि मुक्ति संग्राम की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि वह इस बात को जनता को समझाए कि कांग्रेस भायनक सामाजिक आर्थिक विषमताओं को दूर कर जनता के जीवन स्तर में परिवर्तन लायेगी। भारतीय समाजवादी देश के स्वतन्त्रता संघर्ष में कांग्रेस के साथ सदैव सहयोग करते रहे। देश के समाजवादी चिन्तकों की मुख्य देन रही है कि, उन्होंने मार्क्स के उद्देष्यों तथा तकनीकों का राष्ट्रीय स्वातन्त्रय संघर्ष के साथ ताल मेल विठाने का प्रयत्न किया। इस क्षेत्र में समाजवादी भावधारा के लोग साम्यवादी लोगो से अधिक सफल हो सके। समाजवादियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन में जो योगदान दिया उसने कई कट्टर राष्ट्रावादियों को यह मानने पर बाध्य किया कि राष्ट्रावाद और समाजवाद मे मूल रूप ेसे कोई भिन्नता नहीं है। यह वास्तव में समाजवादियों की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। 1947 में कांग्रेस समाजवादी दल के कानपुर अधिवेशन में दल के नाम से कांग्रेस शब्द हटा दिया। 1948 में समाजवादियों ने कांग्रेस पार्टी से पृथक होकर भारतीय समाजवादी दल नामक एक पृथक दल की स्थापना कर ली। स्वतन्त्रता के पश्चात समाजवादी दल टूट, एकीकरण एवं विखराव की लम्बी कहानी है। बाद में कांग्रेस पार्टी ने अपना लक्ष्य समाजवाद को बनाया। स्थूल रूप से ही सही भारतीय राजनीति में समाजवाद श्रेय, प्रेय, पाथेय बन गया। भारतीय समाजवादी चिन्तन के स्वरूप पर विहंगम दृष्टि से अवलोकन करने से यह बात स्पष्ट है कि भारतीय समातवादी चिन्तन का विकास यूरोपिय समाजवाद के सन्र्दभ में दो बातों से भिन्न रहा है। प्रथमतः भारत में समाजवाद का इतिहास सामाजिक तथा अर्थिक पुनर्निमाण की एक योजना के रूप में नही हुआ बल्कि वह क्रूर विदेशी साम्राजवाद के बन्धनों से मुक्ति एक राजनीतिक विचारधारा के रूप में भी विकसित हुआ है। 1900 से 1947 तक भारत की मूल समस्या भारत वर्ष की राजनीतिक स्वंतत्रता थी और कोई भी लोकप्रिय दल उसकी उपेक्षा नहीं कर सकता था। द्वितीय भारतीय समाजवादी चिन्तन के लिए यह आवश्यक था कि वह खेत मजदूरों एवं किसानों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास करे। क्योंकि भारत मे अभी सामन्तवाद विद्यमान था। देश के समाजवादी नेताओं ने प्रारम्भ मे अपनी प्रभावी भूमिका का निर्वहन किया लेकिन आगे चलकर वे आपसी फूट के शिकार बन गये और अपना प्रभाव धीरे–धीरे खोने लगे। भारतीय समाजवादियों ने तीन प्रमुख समस्याओं पर गम्भीर चिन्तन किया है– अविकसित अर्थतंत्र मे किसानों की भूमिका, वर्ग संघर्ष तथा नियोजन। भारतीय समाजवादी लोकतांत्रिक तरीके से राजनीतिक स्वतंत्रता एवं अर्थिक पुनर्निमाण का परस्पर समन्वय चाहते हैं। संसदीय लोकतन्त्र में इनकी अनन्य आस्था है। गान्धीवाद तथा भारतीय शासन के लोकतान्त्रिक परिवेश से अनुप्राणित होकर भारतीय समाजवादियों ने अपने समाजवाद को पूर्णतः अहिन्सक बनाया तथा पाश्चात्य समाजवादियों के विपरित आर्थिक विकेन्द्रकीरण का प्रबल पक्ष पोषण किया। सम्भवतः विकेन्द्रीकरण का प्रबल अनुसमर्थन, भारतीय समाजवाद को, गान्धीवाद से विरासत के रूप में मिला है।**६**

वर्तमान उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के परिवेश मे यह आमधारणा बनती जा रही है। कि समाजवाद अब अतीत की वस्तु या विचारधारा बन गयी है। सोवियत संघ का विघटन तथा चीन द्वारा क्रमशः शनैः शनैः उदारीकरण एवं विश्वबाजार की ओर कदम बढ़ाना, स्वयं भारत में उदारीकरण एवं विनिवेशीकरण की प्रक्रिया अपनी गति में है। परिणामतः आजकल सपनों के नवीनीकरण की बात होती है, उसमें से एक दूसरे को काटने वाले बयान आते है। एक कहता है कि समाजवाद का पुनरूत्थान असम्भव है। इतिहास का अन्त और विचार धाराओं का अन्त कहने वाले ऐसा मानते है। इनका मानना है कि मानव सभ्यता ने जो हासिल करना था कर लिया। विचारधारा के माध्यम से मानव सभ्यता में गुणात्मक परिवर्तन सम्भव नहीं है। दूसरा तबका मानता है कि समाजवाद के बिना कोई अब चारा नहीं रहेगा। परन्तु यह कमजोर बयान है।**७**

सत्य है कि समाजवाद उन्नीसवीं शदी में आया। यह किस का परिणाम, उत्पत्ति या बाई प्रोडक्ट है? जिस का यह बाई प्रोडक्ट है वह चीज मानव समूहों में सदैव रही है और उसके नये–नये रूप, नये–नये संस्करण विभिन्न युगों में सामने आते हैं। हम कहते हैं, एक शब्द है

इन्सान। यह शब्द प्रिय है। इन्सान का मतलब एक सार्थक जीव है जिसको प्यार देना है वही इन्सान है। जब से मनुष्यों का समाज शुरू हुआ है तब से उसमें एक धारा ऐसी रही है जो प्रत्येक मनुष्य को इन्सान के रूप में सम्मानित जीवन जीते हुए देखना चाहती है। मनुष्य में यह जो अस्था है यह मनुष्य का जातीय मूल्य है। इक्कीसवीं शदी में जब हम मूल्यांकन करते है कि मनुष्य सभ्य हुए हैं या नहीं इसकी कसौटी क्या होनी चाहिए ? मनुष्य एक प्रजातीय अवधारणा है और इसका प्रजातीय मूल्यांकन होना चाहिए। इसीलिए सभ्यता का मूल्यांकन करते समय प्रत्येक मनुष्य की सम्मान की जिन्दगी है, या नहीं इसको देखना चाहिए। मनुष्य में यह आस्था आधुनिक होकर भी चिरन्तन है। समाजवाद ने संगठित रूप से एक प्रजाति के रूप में मनुष्य को परिभाषित किया है। इस दृष्टि से सभी मनुष्य बराबर हैं। सभी भाई–भाई हैं। समाजवाद इसी आस्था का प्रतीक है। समाजवाद एक पद्धति है। इसीलिए जीवन में ऐसी शक्तियाँ कार्यरत होंगी ,तो उसमें ऐसी धाराएँ उन्पन्न होगी, जो प्रत्येक चीज को पैदा करेगी। समाजवाद शब्द के रूप में नया पुराना हो सकता है परन्त मूल वस्तु वहीं रहेगी। ए क अरब के इस देश में अपनी पूंजी अपने संसाधनों के आधार पर भी हम विकास कर सकते है। यह सपना देखकर ही हम समाजवाद का सपना देख पायेंगे। इस तरह भारत एवं विश्व में जब तक असमानता विद्यमान है समाजवाद जीवन्त है।**८**

संदर्भ ग्रन्थ

1. समाजवादी दर्शन एवं डॉ लोहिया : लक्ष्मीकांत वर्मा पृष्ठ संख्या २५,सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उत्तर प्रदेश, लखनऊ १९९१

2. लोहिया का समाजवादी दर्शन : ताराचंद्र दीक्षित , पृष्ठ संख्या २२२
3. लोहिया : ओंकार शरद लोक भारतीय प्रकाशन इलाहाबाद
4. समाजवाद का इतिहाश: आचार्य नरेन्द्रदेव पृष्ठ संख्या ९
5. जाति प्रथा : डॉ राम मनोहर लोहिया नव हिन्द प्रकाशन, बेगम बाजार हैदराबाद १९६४ पृष्ठ संख्या ८४
6. मार्क्स गाँधी एंड सोशलिज्म : डॉ राम मनोहर लोहिया, नव हिन्द प्रकाशन, हैदराबाद , १९६३ पृष्ठ संख्या ६३
7. निराशा के कर्तव्य य डॉ राम मनोहर लोहिया समता प्रकाशन हैदराबाद १९७० पृष्ठ संख्या २८
8. समाजवादी दर्शन एवं डॉ लोहिया : लक्ष्मीकांत वर्मा पृष्ठ संख्या ९, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उत्तर प्रदेश, लखनऊ १९९१